

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद्ध-१०, गुरुवार, ता. २१-८-१९८०  
 वचनामृत-२१६, २१७. प्रपचन नं. १४

जो वास्तवमें संसारसे थक गया है उसीको सम्यग्दर्शन प्रगट होता है. वस्तुकी महिमा जराजर ज्यालमें आ जाने पर वह संसारसे र्थतना थक जाता है कि 'मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, ओक निज आत्मद्रव्य ही चाहिये' ऐसी दृढता करके जस 'द्रव्य सो ही मैं हूं' जैसे भावप्र परिणमित हो जाता है, अन्य सब निकाल देता है.

दृष्टि ओक भी भेदको स्वीकार नहीं करती. शाश्वत द्रव्य पर स्थिर हुयी दृष्टि यह देखने नहीं बैठती कि 'मुझे सम्यग्दर्शन या केवलज्ञान हुआ या नहीं'. उसे-द्रव्यदृष्टिवान ज़पको-जबर है कि अनंत कालमें अनंत ज़पोंने र्थस प्रकार द्रव्य पर दृष्टि जमाकर अनंत विभूति प्रगट की है. द्रव्यदृष्टि होने पर द्रव्यमें जो-जो हो वह प्रगट होता ही है; तथापि 'मुझे सम्यग्दर्शन हुआ, मुझे अनुभूति हुई' र्थस प्रकार दृष्टि पर्यायमें चिपकती नहीं है. वह तो प्रारंभसे पूर्णता तक, सबको निकालकर, द्रव्य पर ही जमी रहती है. किसी भी प्रकारकी आशा बिना बिलकुल निस्पृहभावसे ही दृष्टि प्रगट होती है. २१६.

वचनामृत. २१६, २१६. २०० चल गया है. किसीने यहां लिखा है. 'जो वास्तवमें संसारसे थक गया है...' सर्वार्थसिद्धिका अवतार करनेमें थकान लगी हो, ऐसी अंदर व्यवहार प्रतीति हुई हो कि अनंत कालमें अनंत अवतार नर्क, निगोद आदिके अनंत किये और अभी भी यह आत्माका ज्ञान न हुआ तो जन्म-मरण चौरासीका चक्कर मितेगा नहीं. 'वास्तवमें थक गया है...' पूरा संसार. विकल्पसे, विकल्पसे भी थक गया हो. क्योंकि विकल्प है वह भी दुःख और राग है. आलाला..! 'उसीको सम्यग्दर्शन प्रगट होता है.' यह शर्त. 'वास्तवमें संसारसे थक गया है, उसीको सम्यग्दर्शन प्रगट होता है.' अंतर आनंदका कंद प्रभु, सर्व संसारकी कल्पनाजालमेंसे रुचि हटकर, रुचि अंदरमें जम जाय, तब आनंदकी दशाका अनुभव हो, तब सम्यग्दर्शन प्रगट होता है. आलाला..! संसारकी कोर भी वासना, बडी समृद्धि, कुटुंब कबीला, र्थज्ञत, प्रसिद्धि, मान-सन्मान, उसमें कोर भी बात अंदर

रह गयी तो संसारकी थकान लगी नहीं. आलाला..! संसारका... वास्तवमें कला न?

ऐसे तो बाहरसे संसार छोडकर अनंत बार साधु हुआ है, लेकिन वह संसार नहीं है. संसार तो अंदरमें संसरण इति संसारः. संसार, कोई आत्माकी पर्यायको छोडकर बाहरमें नहीं रहता. अंतरमें जो यौरासी लाज योनिका बीज मिथ्यात्व आदि, उससे जबतक अंदरमें थकान न लगे तो अंतरमें नहीं उतर सकता. आलाला..! यह शर्त.

‘वास्तवमें संसारसे थक गया है...’ थकान लगी है, अंदर दुःख लगता है. वह अंतर आनंदकी जोष करता है. जिसको विकल्प आदि दुःख लगे, संसार विकल्प भी संसार है. आलाला..! क्योंकि वह दुःख है, वह संसार है. उससे थकान लगे वह अंतरमें जाकर सम्यग्दर्शन प्रगट कर सके. आलाला..! यह शर्त. ‘वस्तुकी महिमा बराबर ज्वालमें आ जाने पर...’ वस्तु भगवान आत्मा क्या चीज है, यह ज्वालमें आ जाने पर ‘वह संसारसे इतना अधिक थक जाता है...’ आलाला..! क्या कला? ‘वस्तुकी महिमा बराबर ज्वालमें आ जाने पर...’ चैतन्यप्रभु अनंत आनंद और अनंत ज्ञानादि अनंत गुणका भजना, परमात्मस्वरूप आत्मा.. आलाला..! इसकी जिसको महिमा ज्वालमें आ जाय... आलाला..! तब संसारसे इतना अधिक थक जाता है कि ‘मुझे कुछ भी नहीं चाहिये,...’ मान, सन्मान, दुनियाकी प्रशंसा, दुनियामें मैं दूसरोंसे अधिक हूं, ऐसा एक अभिमान अंदर है, प्रभु! बहुत सूक्ष्म बात है. आलाला..!

संसारी प्राणीकी चीज देजकर उसमें कुछ भी अपनेमें गहराईमें अधिकता अपनी लगे और परकी अधिकता न लगे. परवस्तु दुःखरूप ही है. मैं उससे भिन्न आनंद अधिक हूं. आलाला..! ऐसा अंतर भावमें पुण्यके विकल्पसे भी थककर... क्योंकि अशुभभावका भी अभ्यास अनंत कालका है, ऐसे शुभभावका भी अभ्यास प्रभु! अनंत कालका है. अनंत कालका है. नौवीं त्रैवेयक अनंत बार उत्पन्न हुआ है. वह शुभभावका अभ्यास तो अनंत कालका है. उससे भी थक जाय. आलाला..! कठिन बात है.

‘इतना अधिक थक जाता है कि ‘मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, एक निज आत्मद्रव्य ही चाहिये’...’ भगवान आत्मा चैतन्यरत्न अमूल्य रत्न, जिसकी कोई किमत नहीं, जिसका मोल नहीं ऐसी कोई चीज मैं अंदर हूं, ऐसा जिसको ज्वालमें आता है, ‘एक निज आत्मद्रव्य ही चाहिये’ मुझे तो एक आत्मद्रव्य हो. पर्याय भी नहीं. आलाला..! भगवान आत्मद्रव्य जो त्रिकावी परमात्मस्वरूप अनंत आनंदके

स्वभावसे भरा पडा प्रभु, ऐसी चीजकी महिमा आकर, यही अेक मुजे चालिये, 'ऐसी दढता करके बस 'द्रव्य सो ही मैं हूं'...' ओलो..! राग तो नहीं, पर्याय भी नहीं. पर्याय तो मानती है. 'द्रव्य सो ही मैं हूं' यह द्रव्य नहीं मानता है. द्रव्य तो ध्रुव है. आलाला..! पर्यायमें ऐसी थकान लगे कि पर्यायमें ऐसा लगे कि यह द्रव्य है यही मैं हूं. आलाला..! कोई विकल्पमात्र मेरी चीज नहीं. दुनियामें ईश्वरत भिवे या अधिकता हो, वह कोई वस्तु नहीं है, प्रभु! आलाला..!

सातवीं नर्कका नारकी, अरे..! प्रभुने तो वहां तक कला न, कुंदकुंदाचार्यने, कोई महामुनि समकित्ती आनंदमें थे, कोई सहज ऐसा दोष लग गया कि असुरकुमारका बंधन हो गया. ओलोलो..! फिर भी अंदरमें षटक बहुत है. आलाला..! छत्रस्थ है, अंतर प्रेमका प्यावा इट गया है. आला..! तो भी कोई कारणसे अंदरमें सहज कोई चारित्रका दोष, हां! श्रद्धाका नहीं, थोडा चारित्रका दोष लगे तो असुरमें उत्पन्न होता है न. छोटी गाथामें कला न. प्रवचनसार. अेक ओर प्रभु ऐसा कहे कि सम्यग्दृष्टि तो वैमानिक देवमें ही उत्पन्न हो, मनुष्य हां मनुष्य, नारकी ... परंतु मनुष्य समकित्ती तो वैमानिक देवमें ही उत्पन्न होते हैं. श्रीपने नहीं, भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषमें नहीं. आलाला..! दूसरी ओर स्वयं ऐसा कहे, भगवान कुंदकुंदाचार्य स्वयं कहे, दुनियाको विरोध लगे. विरोध नहीं है, प्रभु! उन्होंने जगतको देण दिया है. पंचमकाल है, अंदर महा उग्र पुरुषार्थसे आगे बढ़ा है, लेकिन उसमें कहीं कुछ ऐसा भावमें रह जाय तो कोई असुरकुमारमें उत्पन्न हो जाय, परंतु हम कहते हैं कि वहांसे निर्वाण प्राप्त होगा. अंतरमें थक गया है. अंदर कोई प्रमादसे ऐसा कोई भाव आ गया कि असुरकुमारका आयुष्य बंध गया. आलाला..! वह तो मिथ्यात्वमें बंधता है. चारित्रदोष तो कोई अनंतवे भागमें नहीं है. मिथ्यात्वका दोष तो बडा मुष्य दोष यह है. अनंत संसारका कारण ही मिथ्यात्व है. आला..!

मिथ्यात्व गया और समकित अेवं मुनि हुआ, तो भी भगवान कुंदकुंदाचार्यको ऐसा लगा कि कोई ऐसा साधु होगा, कदाचित् कोई असुरकुमारमें जायेगा. आलाला..! गजब बात! पंचमकाल है. परंतु सम्यग्दर्शन लेकर तो नहीं जायेगा. भले उत्पन्न होगा पहले मिथ्यात्वमें, बादमें वहां सम्यग्दर्शन पायेगा. असुरकुमारमें भी. जैसे सातवीं नर्कमें जानेवाला सब मिथ्यादृष्टि ही जाते हैं और निकलते वक्त मिथ्यादृष्टि ही निकलते हैं. बीचके कालमें कोई समकित प्राप्त करते हैं. कोई, असंज्य जवमेंसे कोई. असंज्यमेंसे कोई असंज्यवे भागमें. आलाला..! तो उसका भी प्याव करके भगवानने कला कि मिथ्यात्व लेकर गया और फिर मिथ्यात्व लेकर निकलेगा. भले

बीयमें सम्यग्दर्शन, अनुभव हो जायेगा.

यहां तो यह कहते हैं कि थोड़ी भी थकान न लगे और कहीं भी संसारके कोई भी विकल्पमें भीड़ास रह जाय, कोई चिंतामें, कोई विकल्पमें.. आलाहा..! तो उसे आत्मद्रव्यकी याहिये ऐसी दृढता नहीं आती. यहां तो आत्मद्रव्य ही याहिये. आत्मद्रव्य ही. ही लिया है. अंकांत. अंकांत यह है. दूसरा नहीं, यही अनेकांत है. आत्मद्रव्य भी याहिये और राग भी याहिये, यह अनेकांत नहीं. आलाहा..! लोग ऐसा कहते हैं कि निश्चय भी हो और व्यवहार भी हो, यह अनेकांत है. ऐसा नहीं है. निश्चय है वही लाभकारक है, व्यवहार लाभकारक थोड़ा भी नहीं. उसका नाम अनेकांत है.

यहां भी वही कहते हैं, 'ऐसी दृढता करके बस 'द्रव्य सो ही मैं हूं'...' आलाहा..! मानती है पर्याय, परंतु मानती है कि मैं द्रव्य हूं. आलाहा..! गजब बात है! द्रव्यका कभी अभ्यास नहीं किया. द्रव्य क्या चीज है अंदर? आलाहा..! यह कहते हैं, एक आत्मद्रव्य ही याहिये. अंकांत कदा. 'ऐसी दृढता करके बस 'द्रव्य सो ही मैं हूं'...' आलाहा..! भगवान आत्मा अनंत चैतन्य रत्नाकर देव, अनंत चैतन्य रत्नाकर देवकी प्रतीति, अनुभवमें प्रतीति, मात्र अकेली प्रतीति नहीं. उसका आनंदके अनुभवमें प्रतीति कि यह आत्मा आनंदमय है पूरा आत्मा पूर्ण अण्ड अमेद चीज है, ऐसी प्रतीति द्रव्य सो ही मैं हूं, बस. आलाहा..! बाकी कोई चीज मुझे नहीं याहिये. ओहोहो..!

'ऐसे भावर्प परिणामित हो जाता है,...' द्रव्य सो ही मैं है. (उसमें) तो परिणामन नहीं है. द्रव्य सो ही मैं हूं, ऐसा परिणामन पर्यायमें होता है. आलाहा..! भावर्प परिणामन. अंतरकी निर्विकल्प दशा-पर्याय. निर्विकल्प चीज है, उसकी निर्विकल्प दशामें वह प्रतीति और अनुभव होता है तो भावर्प परिणामित हो जाता है. भावर्प परिणामित हो जाता है. जैसा द्रव्य है ऐसा ही परिणामन हो जाता है. उसका नाम सम्यग्दर्शन है. आलाहा..! 'अन्य सब निकाल देता है.' आलाहा..! कोई भी विकल्प छोड़ देता है. मेरे लाभकी चीज नहीं, वह नुकसानकी चीज है. आलाहा..! थोड़ी सूक्ष्म बात है. अपने सिवा कोई भी परद्रव्यकी, पंच परमेष्ठीकी कल्पना, भक्तिका विकल्प... आलाहा..! वह सब निकाल देता है. दृष्टिमेंसे निकाल देता है, अस्थिरतामें आ जाता है. अस्थिरतामें आ जाओ, लेकिन दृष्टिमेंसे निकाल देता है.

'दृष्टि एक ही भेदको स्वीकार नहीं करती.' दृष्टि-सम्यग्दृष्टि एक ही भेदको

स्वीकार नहीं करती. परका तो स्वीकार करती नहीं.. आलाला..! यह बहिनकी वाणी. अनुभवमेंसे बोलकर निकली है. आलाला..! आये नहीं. इस वक्त नहीं आते हैं, कमजोरी है न. 'दृष्टि अकेली भेदको स्वीकार नहीं करती.' परका तो स्वीकार नहीं करती, मुझे लाभदायक है, जैसे. परद्रव्य मुझे लाभदायक है ऐसा स्वीकार तो है नहीं, परंतु द्रव्य और गुण, जैसे भेदका भी स्वीकार नहीं करती. आलाला..! दृष्टि तो अभेदका स्वीकार करती है. अकेला चिदानंद भगवान प्रभु, गुण और गुणिकी अकेला इसको ही दृष्टिमें (स्वीकारती है). दृष्टि है पर्याय, दृष्टि है अवस्था, लेकिन यह स्वीकार पूर्णका करती है. आलाला..! उस पर्यायकी किमत कितनी होगी! लोगोंको अंदरकी प्रतीति-श्रद्धाकी किमत नहीं है. कुछ आचरण करे, इलाना छोड़े, यह छोडा, ब्रह्मचर्य ले लिया, बाहरसे कुछ छोड दिया तो किमत हो जाय. आलाला..!

यहां कहते हैं, 'दृष्टि अकेली भेदको स्वीकार नहीं करती. शाश्वत द्रव्य पर स्थिर लुई..' आलाला..! ध्रुव शाश्वत पदार्थ भगवान, उस पर दृष्टि स्थिर लुई.. आलाला..! 'यह देखने नहीं बैठती..' 'दृष्टि शाश्वत द्रव्य पर स्थिर लुई..' ध्रुव पर स्थिर लुई, वह दृष्टि ऐसा देखती नहीं.. क्या? 'यह देखने नहीं बैठती कि 'मुझे सम्यग्दर्शन या डेवलज्ञान हुआ या नहीं.' पर्याय पर लक्ष्य करती नहीं. ज्ञान हो जाता है, लेकिन दृष्टि बदलती नहीं. आलाला..! ऐसी सूक्ष्म बात है. लोगोंको बाहरकी थोडी किया हो, आचरण हो तो टाट-बाट लगे, कुछ त्याग किया, कुछ धर्म करते हैं ऐसा लगे. आलाला..!

यहां तो कहते हैं, विकल्पमात्रसे थककर अंतर दृष्टि द्रव्य पर लुई तो वह दृष्टि भेदको स्वीकार नहीं करती, परको तो स्वीकार नहीं करती, भेदको भी स्वीकार नहीं करती. आलाला..! भेद है. भगवान आत्मामें अनंत गुणका भेद है. लेकिन वह भेदको स्वीकार नहीं करती. अभेद पर दृष्टि (स्थिर हो गई है). आलाला..! दृष्टांत दिया था न? मेरी मां, मेरी मां. छोटी लडकी मांकी अंगूलीसे छूट जाय. आठ सावकी या छ सावकी हो, पोलीस पूछे तो अकेली कहे. हमने सुना है, पोरबंदर. छोटी लडकी वहां गुम हो गयी. अपासरके पीछे. पुलीस आयी, पूछे, कुछ भी पूछे, लेकिन मेरी मां, मेरी मां. बस, अकेली बात. जैसे समझितीको अकेली मेरा द्रव्य, ऐसी अकेली बात है. आलाला..! दुनिया मानो, न मानो और दुनिया अज्ञानकी भी मलिमा करती है. लाथिके लोडे पर बिठाये तो भी उसे शंका नहीं होती कि मिथ्यादृष्टिको यह? और मैं.. मेरे पास सब है. आलाला..! मेरे पास सब है, मुझे कुछ नहीं चाहिए. आलाला..!

अतीन्द्रिय आनंदरत्नका भोजना मिल गया. आह्लाहा..! अतीन्द्रिय आनंद हीरा, अनंत हीराका भोजना मिल गया. उसके आगे भेदका भी दिभावा नहीं. भेदको भी दृष्टि नहीं देभती. आह्लाहा..! मुझे सम्यग्दर्शन हुआ कि नहीं, उस पर जोर नहीं है. ज्वाब आ ज्ञाय कि अनुभव हो गया. लेकिन उस पर जोर नहीं है. समझमें आया? जोर द्रव्य पर अकार है. मेरी मां, मेरी मां, मेरी मां वह है. आह्लाहा..!

भगवन्! द्रव्य और पर्यायमें भी बड़ा भेद है. द्रव्य उतना शक्तिवंत है कि साक्षात् परमात्मा है. आह्लाहा..! साक्षात् परमात्मा है, तो पर्यायमें परमात्मा होता है. क्या कहते हैं? अनकार. अनकार कहते हैं न? छोटा हाथी हो वह (बड़ा हो जाता है). वह तो क्षेत्र छोटा है, भाव छोटा नहीं है. भाव-ईतनी शक्ति है कि उसको अनकार करे, अकार हो तो केवलज्ञान प्राप्त हो जायगा. आह्लाहा..! बात रुभी लगे. कुछ करना हो तो उसे (लगे कुछ किया). क्योंकि करनेका अभ्यास अनादिसे हो गया है. करना ऐसा अभ्यास हो गया है. और करना वह तो मिथ्यात्व है. रागका करना और देहकी किया मेरेसे होती है, ऐसी मान्यता सब मिथ्यात्व है. आह्लाहा..! लेकिन अनादिका अभ्यास हो गया है. उससे छूटना महा पुरुषार्थ द्रव्यका होता है और द्रव्य यमत्कारिक यीजकी किमत और महिमा आ जाती है, तब वह बाहरकी महिमा छूट जाती है. आह्लाहा..! ऐसा धर्म.

मुझे सम्यग्दर्शन हुआ कि नहीं, उसका भी ज्वाब नहीं करती. ज्वाब ज्ञानमें आ जाय, फिर भी दृष्टि बदलती नहीं. दृष्टिमें दौलत अक भगवान ही रहे. पूर्णानंदका नाथ उसकी दृष्टिमें तिरता है. आह्लाहा..! यहां तो केवलज्ञान हुआ या नहीं, ... भवास हो गया. आह्लाहा..! दृष्टि ही नहीं स्वीकारती, ऐसा कहते हैं. केवलज्ञान हुआ तो भी दृष्टिको उसकी विशेषता नहीं है. क्योंकि दृष्टिमें तो ऐसा केवलज्ञान, अनंत केवलज्ञान, अनंत साद्विअनंत केवलज्ञानकी पर्याय अक ज्ञानगुणमें पडी है. केवलज्ञान तो अक समयकी स्थिति है. ऐसा साद्विअनंत केवलज्ञान. आह्लाहा..! उत्पन्न हुआ बादमें लविष्यमें अनंत काल रहेगा. कभी अंत नहीं. ऐसी पर्यायका पिंड ज्ञानगुण है. जैसे अक गुण ईतना है तो अनंत-अनंत गुणका पिंड द्रव्य है. आह्लाहा..! ऐसे द्रव्यकी जिसको अंतर दृष्टि हुई तो केवलज्ञान हुआ या नहीं, उसकी भी दरकार नहीं. क्योंकि वह तो पर्याय है. आह्लाहा..! ऐसी बात है.

‘उसे-द्रव्यदृष्टिवान श्रवको-भबर है कि अनंत कालमें अनंत श्रवोंने...’ अनंत कालमें अनंत श्रवोंने ‘ईस प्रकार द्रव्य पर दृष्टि जमाकर...’ अनंत (श्रव) मोक्ष

पधारे. छः महिने और आठ समयमें ६०८ तो हमेशा मुक्तिमें जाते हैं. यहांसे अभी नहीं जाते हैं तो महाविदेहसे जाते हैं. अभी केवलज्ञान (पाकर) मोक्ष जाते हैं. आह्लाहा..! कहते हैं कि 'द्रव्यदृष्टिवान् श्रवको-भबर है कि अनंत कालमें अनंत श्रवोंने इस प्रकार द्रव्य पर दृष्टि जमाकर अनंत विभूति प्रगट की है.' आह्लाहा..! अपना द्रव्य नाम सामान्य ध्रुव नित्यानंद प्रभु सच्चिदानंद सत् सत्, अस. पूर्ण सत् (हं), ऐसा जहां दृष्टि लुई...

'इस प्रकार द्रव्य पर दृष्टि जमाकर अनंत विभूति प्रगट की है.' अनंत श्रवोंने, अनंत श्रवोंने अनंती विभूति प्रगट की है. ऐसा नहीं है कि दुर्बल है इसलिये प्रगट न हो. दुर्बल है. दुर्बल भावनामें आता है. परंतु असंभव नहीं है. असंभव नहीं है. दुर्बल अर्थात् महापुरुषार्थ चालिये. असंभव नहीं है, नहीं हो सके ऐसी बात नहीं है. आह्लाहा..! समझमें आया? अनंत-अनंत पुरुषार्थ चालिये, ऐसा जानते हैं. परंतु असंभव है, नहीं हो सकता ऐसा नहीं मानते. आह्लाहा..! सम्यदृष्टि अनंत श्रवोंने विभूति प्रगट की है.

'द्रव्यदृष्टि होने पर द्रव्यमें जो-जो हो वह प्रगट होता ही है;...' आह्लाहा..! अधिकार तो बहुत अच्छा (आया है). किसीने कागजमें लिखा है. कागजमें बोल लिखे हैं. किसने लिखे हैं, मावूम नहीं. यहां रखा है तो उस लिसाबसे पढते हैं. आह्लाहा..! 'द्रव्यदृष्टि होने पर द्रव्यमें जो-जो हो...' द्रव्य नाम पदार्थ प्रभु, उसकी दृष्टिमें जब द्रव्य पर हो तो द्रव्यमें जो-जो है, द्रव्यमें जो-जो है, अनंत यमत्कृति चैतन्यके अनंत गुण यमत्कारिक चीज है, वह सब प्रगट होता है. अंदरमें है वह प्रगट होता है. आह्लाहा..! 'वह प्रगट होता ही है;...' आह्लाहा..! ही है. होता ही है. अंदरमें है और प्राप्तकी प्राप्ति न हो, ऐसा नहीं बनता. ऐसी दृष्टि जम गई कि प्राप्तकी प्राप्ति, है वह मिलता है, उसमें नवीन क्या है? क्षायिक समकित हो, मनःपर्ययज्ञान हो, तो भी उसमें क्या? वह तो अनंतवें भागमें वह चीज निकली है. अंतर तो अनंत.. अनंत.. अनंत.. यमत्कारिक चीज पडी है. आह्लाहा..!

'वह प्रगट होता ही है; तथापि 'मुझे सम्यदृशन हुआ, मुझे अनुभूति लुई' इस प्रकार दृष्टि पर्यायमें शिपकती नहीं है.' आह्लाहा..! सम्यदृष्टिकी दृष्टि ध्रुव पर जम गई. अनुभूति लुई वहां शिपकती नहीं, वहां नहीं शिपकती. आह्लाहा..! वहां रुकते नहीं. मुझे अनुभूति हो गई, अस, संतोष हो गया. ऐसा है नहीं. आह्लाहा..! 'मुझे अनुभूति लुई इस प्रकार दृष्टि पर्यायमें शिपकती नहीं है.' अवस्थामें अवस्थायी

शीजकी दृष्टिके ज़ेरमें, अवस्थायी, जिसमें अवस्था प्रगट होती है अैसा अवस्थायी द्रव्य, अैसी दृष्टि लुंठ उसको अवस्था परसे दृष्टि उठ जाती है. आलाला..! यह बात है. लोगोंको कठिन लगे.

भगवानने यली कला है. कुंडकुंदाचार्यने तो ११वीं गाथामें अेक ली कला, 'भूदत्थमस्सिदो खलु'. भूतार्थ त्रिकाव भगवान द्रव्य, उसका आश्रय लेनेसे सम्यज्दर्शन होता है. आलाला..! ११वीं गाथामें शुर् किया है. त्रिकाव भूतार्थ अेक समयमें त्रिकावी शीज. आलाला..! उसके आश्रयसे, उसके अवलंबनसे, उसकी महिमा जगनेसे सम्यज्दर्शन होता है. दूसरा कोंठ उसका उपाय नहीं. आलाला..!

'ईस प्रकार दृष्टि पर्यायमें थिपकती नहीं है.' आलाला..! पर्याय उत्पन्न होती है, लेकिन वहां दृष्टि रहती नहीं. दृष्टिका ज़ेर तो द्रव्य पर है. आलाला..! जहां जिस स्थानमें जाना लो, उस स्थानमें लक्ष्य होता है. बीचमें मकान, गांव आदि बलुत आते हैं. सबको छोड देता है. कहीं अटकता नहीं. मुंजे सिद्धपुर जाना है. सिद्धपुर जानेका रास्ता क्या? यह प्रश्न आया है शास्त्रमें. मुंजे तो सिद्धपुर जाना है. सिद्धपुर जानेका रास्ता क्या? दूसरा कोंठ रास्ता पूछता नहीं. आलाला..! कोंठ कले कि, वह बाड है, थूलरकी बाड है, उसके बीचमेंसे चले जाओ. अैसे प्रतिकूलता-थूलरकी बाड बीचमें आती है, लेकिन उसे छोडकर अंदर चला जा. आलाला..! वस्तु अैसी है, बापू! आलाला..! लोगोंको अेकांत लगे. बाह्य आचरणके आगे, बाह्य आचरणके आगे यह तुर्य लगे. बाह्य आचरण लो वह उसे विशेष लगे. यहां कलते हैं कि बाह्य आचरणकी तो कोंठ किमत नहीं है. परंतु सम्यज्दर्शन, अनुभूति (लुंठ) उस पर भी उसकी दृष्टि थिपकती नहीं. आलाला..! दृष्टिमें तो भगवान अंदर बैठा है, सर्वज्ञ भगवानके स्थानमें-बैठकमें बैठा है. आलाला..! धन्य भाग्य! अैसी बात है, प्रभु! यह तो बलिन अैसा बोले थे, उसे विज लिया. आला..! अंतरकी अनुभूतिसे यह भाषा आयी है.

'अनुभूति लुंठ, ईस प्रकार दृष्टि पर्यायमें थिपकती नहीं है. वह प्रारंभसे पूर्णता तक,...' प्रारंभसे पूर्णता तक, शुर्आतसे पूर्णता तक. शुर्आत सम्यज्दर्शन, पूर्ण केवलज्ञान. आलाला..! 'प्रारंभसे पूर्णता तक, सबको निकावकर,...' बीचकी दशा जे आती है, सबको दृष्टि छोडकर. आलाला..! दृष्टि द्रव्य पर जम गंठ है. दृष्टि पर्यायको स्वीकारती ली नहीं. आलाला..! पर्याय द्रव्यको स्वीकारती है. स्वीकार पर्यायमें होता है न. वेदन और कार्य तो पर्यायमें होता है, ध्रुवमें काम होता नहीं. लेकिन उस पर्यायका कार्य सम्यक् कब कलनेमें आये? कि द्रव्यदृष्टि आयी, लक्ष्यमें-दृष्टिमें (द्रव्य)



आया तब. आलाहा..!

‘वल प्रारंभसे पूर्णता तक, सबको निकावकर, द्रव्य पर ही जमी रहती है.’ आलाहा..! शुरूआतसे विकल्प छोटा या बडा, सबको निकावकर दृष्टि पल्लेसे ही अंत तक द्रव्य पर ही रहती है. आलाहा..! २१६. सोलह, सोलह. २१६. आलाहा..! यह तो बहिनके अनुभवके वचन हैं. अंतर आनंदके अनुभवमेंसे निकले लुअे वचन हैं. कोई कृत्रिम नहीं है, किसीका रटा हुआ नहीं, किसीका पढकर नहीं. आलाहा..! अंतरकी बातें हैं, प्रभु! क्या करें? अंतरकी बातें अंतरको जाननेवाले जाने. आलाहा..! बाह्य दिखावावाणे अंतरकी किमत नहीं जानते. आलाहा..! ‘द्रव्य पर ही जमी रहती है.’

‘किसी भी प्रकारकी आशा बिना..’ जहां भगवान मिल गये, फिर आशा क्या? भगवान ही केवलज्ञान प्राप्त करवायेंगे. आलाहा..! दूज उगी है तो पूर्णिमा होगी ही. आलाहा..! जैसे सम्यक्दर्शन-दूज अंदरसे उगी, बीजका ज्ञान है, पूर्णका ज्ञान है और बीचमें अवरोध कितना है, उसका भी ज्ञान है. आलाहा..! ‘किसी भी प्रकारकी आशा बिना बिलकुल निस्पृहतासे ही दृष्टि प्रगट होती है.’ आलाहा..! है न? ‘किसी भी प्रकारकी आशा बिना बिलकुल निस्पृहतासे ही दृष्टि प्रगट होती है.’ २१६ (पूरा हुआ). अब २१७ है. इसमें लिखा है, कोई रजकर गया है.

द्रव्यमें उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सब होने पर भी कहीं द्रव्य और पर्याय दोनों समान कोटिके नहीं हैं; द्रव्यकी कोटि उस्य ही है, पर्यायकी कोटि निम्न ही है. द्रव्यदृष्टिपानको अंतरमें घटना अधिक रसकसयुक्त तत्त्व दिखायी देता है कि उसकी दृष्टि पर्यायमें नहीं चिपकती. लते ही अनुभूति हो, परंतु दृष्टि अनुभूतिमें-पर्यायमें-चिपक नहीं जाती. ‘अहा! जैसा आश्चर्यकारी द्रव्यस्वभाव प्रगट हुआ अर्थात् अनुभवमें आया!’ जैसा ज्ञान जानता है, परंतु दृष्टि तो शाश्वत स्तंभ पर-द्रव्यस्वभाव पर-जमी सो जमी ही रहती है. २१७.

२१७. ‘द्रव्यमें उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सब होने पर भी..’ २१७. द्रव्य अर्थात् पदार्थ. बहुत लोग (आये हैं). शांति रजते हैं. बहुत लोग है. कितने तो उपर बैठे हैं. अभी और आयेंगे. दूज पर, बहिनकी दूज पर नौ लोग तो हिरासे वधायेंगे. उनका पूरा घर आयेगा. दूसरे भी आयेंगे. लोग तो आयेंगे. आलाहा..! ‘द्रव्यमें उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सब होने पर भी..’ क्या कहा? ये जो द्रव्य है न?

उसमें तीनों हैं. अपना द्रव्य त्रिकावी, उसमें अनंत गुण और अनंती पर्याय. अकेले समयमें अकेले पर्याय नहीं है, अनंती पर्याय (है). आह्लाह्ला..! क्योंकि कार्य तो पर्यायमें होता है न. गुण और द्रव्यमें कार्य नहीं होता. गुण और द्रव्य तो ध्रुव है. आह्लाह्ला..! अनंती पर्याय बाह्य प्रगट है, वह कार्य है. उस कार्यका कारण त्रिकावी द्रव्य-गुण है.

‘द्रव्यमें उत्पाद-व्यय-घ्नौव्य सब होने पर भी...’ क्या कहते हैं? जहां द्रव्य पर दृष्टि दी है, उस द्रव्यमें तीनों हैं. गुण और पर्याय भले हो. ‘कहीं द्रव्य और पर्याय समान कोटिके नहीं हैं;...’ आह्लाह्ला..! द्रव्य और पर्याय दोनों समान कोटिके नहीं है. भले द्रव्यमें उत्पाद-व्यय-घ्नौव्य सब हो. आह्लाह्ला..! परंतु द्रव्य और पर्याय दोनों समान कोटिके नहीं हैं. ऐसी अनंती.. अनंती.. अनंती.. अनंती.. अनंती.. पर्यायका तो अकेले गुण, जैसे अनंता.. अनंता.. अनंता.. अनंता.. गुणका अकेले द्रव्य. आह्लाह्ला..! केवलज्ञान उत्पन्न हुआ साद्विअनंत तो कितनी पर्याय दुर्घ? साद्विअनंत. अकेले समय ही अकेले पर्याय रहती है. साद्विअनंत. साद्विअनंत पर्याय और भूतकालकी पर्याय भले अज्ञान हो, सब मिलकर अकेले ज्ञानगुण है. आह्लाह्ला..!

ऐसे क्षायिक समकित प्रगट हुआ. सिद्धमें भी क्षायिक रहता है. श्रेणिक राजको क्षायिक समकित उत्पन्न हुआ. नर्कमें हैं. वही क्षायिक लेकर सिद्धमें जायेंगे. वहांसे निकलकर तीर्थकर होंगे. आह्लाह्ला..! भले नर्कमें हैं, लेकिन क्षायिक समकित है. वहांसे (निकलकर) प्रथम तीर्थकर होंगे, मोक्षमें जायेंगे. सिद्ध होंगे. क्षायिक समकित उत्पन्न हुआ वही समकित सिद्धमें लेकर चले जायेंगे. आह्लाह्ला..!

‘द्रव्यमें उत्पाद-व्यय-घ्नौव्य सब होने पर भी कहीं द्रव्य और पर्याय दोनों समान कोटिके नहीं हैं; द्रव्यकी कोटि उच्च ही है,...’ द्रव्य नाम वस्तुकी कोटि-प्रकार तो मला उच्च है! ओहो..! पर्याय तो अकेले समयमें अनंत गुणकी अनंती पर्याय हैं. अकेले ही पर्याय नहीं है. प्रत्येक द्रव्य-अकेले परमाणुमें, अकेले परमाणुमें भी अनंती पर्याय प्रगट है. अनंती! क्योंकि परमाणुमें अनंत गुण हैं. जितनी संख्या आत्मामें गुणकी है, उतनी संख्या अकेले परमाणुमें जड गुणकी है. आह्लाह्ला..! और उतनी ही अनंती पर्याय प्रगट है. जितने गुण हैं, उसकी अनंती पर्यायअकेले समयमें (प्रगट है). पर्याय बिनाका कभी द्रव्य नहीं रहता. विशेष बिना सामान्य तो गधेके सिंगेके बराबर है. समजमें आया? विशेष बिना अकेला सामान्य कभी रहता नहीं. आह्लाह्ला..! और सामान्य भी कभी विशेष बिना रहता नहीं. सामान्यको तो प्रति समय पर्याय होती है. आह्लाह्ला..! ऐसी चीज है अंतरमें.

‘द्रव्यकी कोटि उच्च ही है, पर्यायकी कोटि निम्न ही है.’ अकेले समयकी पर्याय,

ऐसी अनंती-अनंती पर्यायि अेक गुणकी, ऐसी अनंती-अनंती पर्यायिका अेक गुण, अैसे अनंत गुणका अेक द्रव्य. तो पर्यायिकी कोटिसे द्रव्यकी कोटि उच्य हो गयी. आलाला..! अेक समकित, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान आदि सब गुणकी अनंती पर्यायि प्रगट है. प्रत्येक द्रव्यमें अनंत पर्यायि प्रगट हैं. परमाणुमें भी वरुण, गंध, रस, स्पर्श आदि अनंत गुणकी अनंत पर्यायि प्रगट है. आलाला..! लेकिन पर्यायिकी कोटि द्रव्यमें नहीं आ सकती. द्रव्यकी कोटि बलवान है. ऐसी अनंती पर्यायि निकले तो द्रव्य कभी ञ्जतम नहीं हो ञ्जता. आलाला..!

अक्षरके अनंतवे भागमें निगोदमें रहा. पर्यायमें. तो भी द्रव्य परिपूर्ण है. और सिद्धमें केवलज्ञान हुआ तो द्रव्य परिपूर्ण है. केवलज्ञान हुआ तो द्रव्यमें कमी लुई, क्योकि बडा ज्ञान बाहर आया, तो द्रव्यमें कुछ कमी लुई अैसे है नहीं. आलाला..! वीतरागका मार्ग अवोकिडक है, भाई! आलाला..! अक्षरके अनंतवे भागमें निगोदमें पर्यायि होती है, तो भी द्रव्य उतनाका उतना ही है. बाह्यमें बलुत नहीं है ईसविये अंदर अधिक पुष्ट है, (अैसे नहीं है). अक्षरके अनंतवे भागमें अनंत गुण बाह्यमें प्रगट है, तो अंदर गुणमें विशेष पुष्टि है, अैसे नहीं है. और केवलज्ञानमें केवलज्ञानकी पर्यायि, अनंत गुणकी अनंती पूरी पर्यायि प्रगट लुई तो द्रव्यमें कुछ कम हो गया, अैसे है नहीं. आलाला..! गजब बात है! वीतरागका मार्ग...

केवलज्ञानकी यह सब पर्यायि आयी, अंदरसे आयी तो कुछ कम हुआ कि नहीं? घटाडो क्या कलते हैं? कमी. कमी होती कि नहीं? और अनंतवें भागमें, अक्षरके अनंतवें भागमें उघाड रहा निगोदमें तो अंतरमें पुष्टि होगी कि नहीं? बाहरमें अल्प है तो अंदर द्रव्यमें पुष्टि होगी कि नहीं? ना, प्रबु! ना. द्रव्य उस समय भी पूर्ण है और केवलज्ञान हुआ उस समय भी द्रव्य तो परिपूर्ण ही है. आलाला..! अरे..! द्रव्यकी महिमा, द्रव्यकी अचिंत्यता, यमत्कारिक द्रव्य क्या है, उसे सुना नहीं. आलाला..! अंतरमें द्रव्यकी यमक क्या है! ओलोलो..! जिसकी यमकका पार नहीं. चाले ञ्जितनी यमकपर्यायि प्रगट हो, फिर भी द्रव्यमें कमी होती नहीं. द्रव्यमें अल्पता होती नहीं. समजमें आता है? भाषा तो (सादी है). आलाला..!

यह द्रव्य. उस द्रव्य पर दृष्टि लुई, ञ्जवास हो गया. ञ्जन्म-मरणका अंत आकर, केवलज्ञान पाकर मुक्ति होगी. आलाला..! उसकी किमत नहीं और बाह्य त्यागकी और ईसकी, उसकी महिमा. आलाला..! क्या हो?

मुमुक्षु :- बाहर ञ्ज्यादा दिभाई देता है.

उत्तर :- बाहर ञ्ज्यादा दिभाई देता. बाहरमें दिभाव ञ्ज्यादा लगे. उसने त्याग

किया हो, अकेली लंगोटी पहनी है, कोई कपडा नहीं है. भगवान! कोई व्यक्ति का काम नहीं है, प्रभु! यहां तो द्रव्य और पर्यायकी बात अभी चलती है. आलाहा..! पर्याय अनंतवे भागमें हो, प्रत्येक गुणकी, तो भी गुणमें कोई पुष्टि और विशेष है, ऐसा नहीं है. और गुणमेंसे केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिक समकित साद्विअनंत.. ओहो..! अनंत.. अनंत.. अनंत वीर्य, अनंत वीर्य प्रगट हुआ तो साद्विअनंत वीर्य (रहेगा), तो भी द्रव्यमें कोई कमी हुई है, बाहरमें ऐसा अनंत वीर्य प्रगट हुआ तो अनंत काव रहेगा, इसलिये द्रव्यमें कुछ कमी है, ऐसा नहीं है. आलाहा..!

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- यह एक चीज ऐसी है. आलाहा..! केवलज्ञान आदि अनंत-अनंत गुण पूर्ण प्रगट हो, पूर्ण. तो भी द्रव्य तो पूर्ण ही है. द्रव्यमें एक अंश भी कमी हुई है, ऐसा नहीं है. आलाहा..! ऐसे द्रव्यकी जबर नहीं, प्रभु! आलाहा..! और उस द्रव्यकी दृष्टि हुआ बिना धर्मका प्रारंभ-शुरूआत होती नहीं. आलाहा..! ऐसा ही द्रव्य चैतन्य भगवान विराजता है. अरे..! वह क्या, परमाणु भी ऐसा है. परमाणुमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अनंत भरे हैं. पर्यायमें अनंत गुण पर्याय आ जाय, अनंत गुण काली पर्याय आ जाय, तो अंदर वर्णगुणमें कुछ कमी हुई है, अल्पता हुई है, ऐसा नहीं है. और एक गुण वर्ण बाहर रहे तो वहां वर्णमें पुष्टि हुई है, ऐसा नहीं है. आलाहा..! पर्यायकी कमी-बेसी कुछ भी हो, भगवान द्रव्य तो जैसा है वैसा त्रिकाव अकल्प रहता है. आलाहा..! उसमें कमी-बेसी कभी होती नहीं. ऐसा यहां कहते हैं. बहिन ऐसा कहना चाहती है. देजो!

‘द्रव्यदृष्टिवानको अंतरमें धतना अधिक रसकसयुक्त तत्त्व द्विभायी देता है...’ रसकस, देजो! ‘द्रव्यदृष्टिवानको अंतरमें धतना अधिक रसकस...’ रस और कस-माव. ऐसा ‘रसकसयुक्त तत्त्व द्विभायी देता है...’ आलाहा..! ‘कि उसकी दृष्टि पर्यायमें नहीं थिपकती.’ पर्यायमें संतुष्ट नहीं होती. आलाहा..! दृष्टि जहां अंदर द्रव्य पर जम गयी है, वह पर्याय पर कहीं थिपकती नहीं, कहीं भी अटकती नहीं. ठीक हुआ, धतना हुआ ठीक हुआ ऐसे नहीं. आलाहा..! पूर्ण प्रगट हो तो भी धतना ठीक हुआ ऐसा नहीं है. पूर्णका नाथ तो परमात्मा स्वयं भगवान पूर्णानंदका नाथ अनाद्विअनंत अकल्प विराजमान है. आलाहा..! (ऐसा) ‘तत्त्व द्विभायी देता है कि उसकी दृष्टि पर्यायमें नहीं थिपकती. लवे ही अनुभूति हो...’ सम्यग्दर्शन और अनुभूति हो, ‘परंतु दृष्टि अनुभूतिमें-पर्यायमें-थिपक नहीं जाती.’ अनुभूति पर पर्याय थिपकती नहीं. आलाहा..! वहां दृष्टि थिपकती नहीं. आलाहा..! आज

સૂક્ષ્મ બાત આવી છે, પ્રભુ! માલકા માલ છે. ઉસકા માલ છે, વહ માલ છે. 'દષ્ટિ અનુભૂતિમેં-પર્યાયમેં-ચિપક નહીં જાતી.'

'એસા આશ્ચર્યકારી દ્રવ્ય સ્વભાવ પ્રગટ હુઆ અર્થાત્ અનુભવમેં આયા' એસા જ્ઞાન જ્ઞાનતા છે,...' જ્ઞાન સબ જ્ઞાનતા છે. 'પરંતુ દષ્ટિ તો શાશ્વત સ્તંભ પર...' શાશ્વત સ્તંભ, વજ્રકા સ્તંભ દ્રવ્ય. આહાહા..! એકરૂપ ત્રિકાલી અનંત ગુણકી સત્તાકા એકરૂપ. પર્યાયમેં કમ-અધિક પર્યાય કુછ ભી હો, દ્રવ્યમેં કમી-બેસી કમી હોતી નહીં. આહાહા..! 'એસા જ્ઞાન જ્ઞાનતા છે, પરંતુ દષ્ટિ તો શાશ્વત સ્તંભ પર-દ્રવ્યસ્વભાવ પર-જમી સો જમી હી રહતી છે.' આહા..! દ્રવ્ય પર દષ્ટિ તો જમી સો જમી હી રહતી છે. (શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)